शासकीय शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 रमाशंकर

असिस्टेंट प्रोफेसर (शिक्षाशास्त्र विभाग) भारतीय महाविद्यालय, फर्रूखाबाद, उत्तर प्रदेश

सारांश

शिक्षा मूलतः संस्कार एवं सोच निर्माण की प्रक्रिया है, जिससे ज्ञान के नए क्षितिज उभरते हैं मानवीय दक्षताओं का विकास होता है नए संकल्प पनपते हैं तथा जीवन को पूर्णता की ओर ले जाने के बहुआयामी चेष्टाओं एवं मूल्यों को गति मिलती है। इस प्रकार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य हैं– ऐसे मानवीय गुणों का विकास करना जो व्यक्ति तथा समाज की बौद्धिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक सामर्थ्य को बढ़ाने में सहायक हो जैसे व्यक्ति के ज्ञान एवं कौशल के स्तर को अभिवृद्धि करना, व्यक्ति को अपनी सम्यक पूर्णता की प्राप्ति हेतु सचेष्ट बनाना, समग्र व्यक्ति की रचना करना तथा समाज में परस्पर सौहार्द, भाई–चारा एवं एक दूसरे के प्रति आदर भावना उत्पन्न करना जिससे एक ऐसे समाज के निर्माण की कल्पना साकार हो सके जिसमें जाति, पन्थवाद, आर्थिक विषमता क्षेत्रीयता एवं भाषा आदि के आधार पर पाई जाने वाली संकीर्ण प्रवृत्तियों के स्थान पर बुनियादी मानवीय गुणों यथा ''वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे'' को बढ़ावा मिले। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य शासकीय शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना है। जिस हेतु प्रार्थी के द्वारा न्यादर्श के रूप में 10 शहरी तथा 10 ग्रामीण विद्यालयों के कक्षा 10 व 11 में अध्यनरत 400 छात्रों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक न्यायदर्शन विधि (Stratified Random Sampling) का प्रयोग करते हुए किया गया है। शोध कार्य के उपरांत प्राप्त निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि आकड़ों के विश्लेषण से यह बात स्पष्ट है कि शहरी शासकीय विद्यालयों में अध्ययनत छात्र ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की अपेक्षा अधिक समायोजित दिखे जिसके पीछे निहित कारण में शहरी शासकीय विद्यालयों की अनुशासन व्यवस्था, अध्यापकों की ईमानदारी या जांच के भय से किया गया अध्यापन कार्य तथा जाँच एजेन्सियों की अधिक सक्रियता आदि के कारण छात्र अधिक दिन विद्यालय आये तथा कक्षा में रूककर अध्ययन किये जिसके परिणाम स्वरूप वे अधिक समायोजित दिखे इसके ठीक विपरीत ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में कम अनुशासन, अध्यापकों एवम् जाँच एजेन्सियों की उपेक्षा तथा माता–पिता द्वारा बच्चों पर पूर्ण ध्यान न देने के कारण ग्रामीण विद्यालयों के बच्चे शहरी विद्यालयों की उपेक्षा कम समायोजित दिखे।

संकेत शब्दः– *सभ्यता, संस्कृति, पन्थवाद, बौद्धिक, भोगवाद, माध्यमिक शिक्षा, आर्थिक विषमता।*

प्रस्तावना :-

मानव सभ्यता और संस्कृति की विकास यात्रा तथा वर्तमान स्वरूप मानव के बौद्धिक विकास का परिणाम है। आज हम ऐसे युग में है जहां अकल्पनीय प्रगति के परिणाम स्वरूप लोगों के जीवन स्तर में आशातीत सुधार हुए हैं, वहीं मानवीय समस्याओं ने विश्वव्यापी रूपधारण किया है और करोड़ो लोगों को दो वक्त का भोजन तक उपलब्ध नहीं है। इसके अतिरिक्त भी वायु एवं जल प्रदूषण तथा खाद्य कड़ी की विषाक्तता, ओजोन कवच का ह्रास, मादक पदार्थों का उपयोग, संक्रामक रोगों का फैलाव, विश्व तापमान में वृद्धि, परमाणु परीक्षणों की श्रृंखला तथा परमाणु कचरे का निपटारा आदि समस्याओं और चुनौतियों का सामना करने में स्वयं को असहाय पा रहे हैं। ऐसे समय में हमें उस मार्ग को अपनाना चाहिए जो प्रतियोगिता की ओर नहीं सहयोग की ओर ले जाता हो, अनवन की ओर नहीं सामंजस्य की ओर ले जाता हो, भोगवाद की ओर नहीं संयम की ओर ले जाता है निःसंदेह शिक्षा ही वह कार्य कर सकती है। शिक्षा निरन्तर चलने वाली एक सामाजिक प्रक्रिया है। मनुष्य के समुन्नत विकास के लिए नई पीढ़ी को तैयार करने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी माध्यमिक शिक्षा पर निर्भर है। माध्यमिक शिक्षा को शिक्षा की रीढ़ माना जाता है। आजादी के समय भारत को विरासत में मिली ऐसी शिक्षा व्यवस्था जो सिर्फ आकार में ही छोटी नही थी, बल्कि जिसमें ढाँचागत असन्तुलन भी था। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य हैं– ऐसे मानवीय गुणों का विकास करना जो व्यक्ति तथा समाज की बौद्धिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक सामर्थ्य को बढ़ाने में सहायक हो जैसे व्यक्ति के ज्ञान एवं कौशल के स्तर को अभिवृद्धि करना, व्यक्ति को अपनी सम्यक पूर्णता की प्राप्ति हेतु सचेष्ट बनाना, समग्र व्यक्ति की रचना करना तथा समाज में परस्पर सौहार्द, भाई–चारा एवं एक दूसरे के प्रति आदर भावना उत्पन्न करना जिससे एक ऐसे समाज के निर्माण की कल्पना साकार हो

सके जिसमें जाति, पन्थवाद, आर्थिक विषमता क्षेत्रीयता एवं भाषा आदि के आधार पर पाई जाने वाली संकीर्ण प्रवृत्तियों के स्थान पर बुनियादी मानवीय गुणों यथा ''वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे'' को बढ़ावा मिले।

समस्या कथन :-

''शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक समायोजन क्षमता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन''

शोध अध्ययन के उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन निम्नलिखित उद्दश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रस्तावित है।

1. शासकीय शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. अशासकीय शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सांख्यिकी परिकल्पना के रूप में शून्य परिकल्पना (Null Hypothesis) का चयन शोधकर्ता ने किया है, प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाएं चुनी गई हैं जिनकी पुष्टि की जानी है।

1. शहरी एवम् ग्रामीण शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शहरी एवम् ग्रामीण अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यायदर्श चयन :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्तरीकृत यादृच्छिक न्यायदर्शन (Stratified Random Sampling) का प्रयोग करते हुए माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित वाराणसी जनपद के विद्यालयों में 10 शासकीय विद्यालयों को लिया है, जिनमें प्रत्येक से 10 शहरी एवं 10 ग्रामीण विद्यालयों का चयन किया गया है और इनमें अध्ययनरत कक्षा 10 एवं 11 के छात्रों में से प्रत्येक विद्यालय की इन कक्षाओं से छात्रों का चयन करते हुए अनुंसधान कार्य हेतु 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

क्र.सं.	विद्यालय का स्वरूप	विद्यालयों की संख्या	कक्षा–10 के विद्यार्थी	कक्षा 11 के विद्यार्थी	योग
1	शहरी शासकीय विद्यालय	10	100	100	200
2	ग्रामीण शासकीय विद्यालय	10	100	100	200
	योग	20	200	200	400

शोध उपकरण :-

शोधकर्ता ने अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु विश्वसनीयता, वैधता, वस्तुनिष्ठता, तथा व्यापकता को ध्यान में रखकर प्रदत्तों के संकलन हेतु निम्न उपकरण का प्रयोग किया है।

1. समायोजन मापन के लिए– प्रो. आर.पी. सिंह एण्ड ए.के.पी. सिन्हा द्वारा निर्मित समायोजन मापनी।
2. शैक्षिक उपलब्धि के लिए छात्रों का वार्षिक प्राप्तांक ही शैक्षिक उपलब्धि के रूप में प्रयोग किया जायेगा।

प्रदत्तों का संकलन :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों, न्यादर्श, एवं उपकरणों की प्रकृति को देखते हुए प्रदत्तों के संकलन हेतु सर्वप्रथम एक कार्य योजना तैयार करना आवश्यक प्रतीत हुआ, जिससे कार्य व्यवस्थित ढंग से पूर्ण हो सके।

योजनानुसार ही चयनित प्रत्येक विद्यालय में शोधकर्ता स्वयं जाकर प्रधानाध्यापक से अनुमति लेकर प्रत्येक स्तर पर परीक्षण प्रशासित किये। परीक्षण प्रशासन के उपरान्त प्रत्येक उपकरणों के प्राप्ताकों का सम्पादन, सारणीयन करने के पश्चात उपयुक्त सांख्यिकी विधियों का प्रयोग करके शोध परिणाम प्राप्त किये गये।

प्रदत्तों का विश्लेषण :-

प्रदत्तों की उपादेयता उनके समीचिन विश्लेषण में निहित है विश्लेषण का मुख्य उद्देश्य प्रदत्तों से नवीन तथ्यों को प्राप्त करना है, प्रदत्त विश्लेषण की इस प्रक्रिया में सांख्यिकीय प्राविधियों का विशेष महत्व होता है। सांख्यिकीय गणनाएँ शोध अध्ययन का आधार होती हैं, प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण के अन्तरगत ''प्रतिशत के रूप में आकृति वितरण गणना'' मध्यमान एवं मानक विचलन तथा मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता टी (t-test) परीक्षण द्वारा ज्ञात किया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण एवं इससे प्राप्त परिणामों की व्याख्या उद्देश्यनुसार किया गया है।

उद्देश्य– 1. शासकीय शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना

चयनित दोनों प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शासकीय शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों की समायोजन के अध्ययन हेतु दोनों प्रकार के विद्यालयों में सिन्हा एवं सिंह की समायोजन मापनी का प्रयोग जानकारी प्राप्त करने के लिए किया गया जानकारी से प्राप्त आकड़ों का वर्गीकरण करके आवृत्ति वितरण तालिका का निर्माण किया गया और प्रतिशत ज्ञात किया गया। निम्न सारणी से शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन का अन्तर देखा जा सकता है।

विद्यालय	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्ममानों के अन्तर की मानक त्रुटि	टी अनुपात	सार्थकता स्तर
शहरी शासकीय	100	11.2	3.39	.60	5.17	0.01स्तर पर सार्थक
ग्रामीण शासकीय	100	8.1	2.56			

सारणी मान df (98) 0.01 स्तर पर = 2.63

तालिका से स्पष्ट है कि शहरी शासकीय विद्यालयों के छात्रों के समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान 11.2 तथा मानक विचलन 3.39 है जबकि ग्रामीण शासकीय विद्यालयों के छात्रों की समायोजन सम्बन्धी स्थिति के प्राप्तांकों का मध्यमान 8.1 तथा मानक विचलन 2.56 है। साथ ही यह भी है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के छात्रों की समायोजन सम्बन्धी स्थिति के प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता परीक्षण हेतु परिगणित टी अनुपात 5.17 है जो मुक्तांश (98) के लिए 0.01 स्तर पर सारणीमान 2.63 से बहुत अधिक है

उपरोक्त अवलोकन के उपरान्त यह बात स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है कि शहरी शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र शासकीय ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की अपेक्षा अधिक समायोजित दिखें जिसके पीछे निहित कारणों में शहरी शासकीय विद्यालयों की अनुशासन, अध्यापकों की ईमानदारी या जांच के भय से किया गया अध्यापन कार्य तथा जांच एजेन्सियों की अधिक सक्रियता आदि के कारण छात्र अधिक दिन विद्यालय आए तथा कक्षा में रूककर अध्ययन किए जिसके परिणाम स्वरूप वे अधिक समायोजित दिखे। इसके ठीक विपरीत ग्रामीण विद्यालयों में कम अनुशासन, अध्यापकों एवं जांच एजेन्सियों की उपेक्षा तथा माता–पिता द्वारा बच्चों पर पूर्ण ध्यान न देने के कारण उन विद्यालयों के बच्चे शहरी विद्यालयों की अपेक्षा कम समायोजित दिखे।

उद्देश्य–2 शासकीय शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना

चयनित दोनों प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता ने दोनों प्रकार के शासकीय शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के न्यादर्श में चयनित छात्रों का पिछली कक्षा के शैक्षणिक उपलब्धि प्रपत्र को बच्चों से लेकर आँकड़े एकत्रित किए गए। प्राप्त आँकड़ों को वर्गीकृत एवं सारणीबद्ध करने के पश्चात मध्यमान और मानक विचलन ज्ञात करके प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता टी–टेस्ट द्वारा ज्ञात की गयी है इसे हम सांख्यकीय आँकड़ों के आधार पर इस तरह दर्शाया जा सकता है।

विद्यालय	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्ममानों के अन्तर की मानक त्रुटि	टी अनुपात	सार्थकता स्तर
शहरी शासकीय	100	15.24	1.54	.29	16.14	0.01स्तर पर सार्थक
ग्रामीण शासकीय	100	10.36	1.38			

सारणी मान (df) (98) 0.01स्तर पर = 2.63

तालिका से स्पष्ट है कि शासकीय शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि सम्बन्धी स्थिति का प्राप्तांकों का मध्यमान 15.04 तथा मानक विचलन 1.54 है जबकि शासकीय ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि सम्बन्धी स्थिति का प्राप्तांकों का मध्यमान 10.36 तथा मानक विचलन 1.38 है। साथ ही यह भी है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि सम्बन्धी स्थिति के प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता परीक्षण हेतु परिगणित टी अनुपात 16.64 है जो मुक्तांश (98) के लिए 0.01 स्तर पर सारणीयन 2.63 से पर्याप्त अधिक है।

उपरोक्त के अवलोकन के उपरान्त यह बात स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है कि शहरी शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र शासकीय ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की अपेक्षा अधिक शैक्षणिक उपलब्धि दिखी जिसके पीछे निहित कारणों में शहरी विद्यालयों में उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धता, उचित एवम् कठोर अनुशासन अध्यापकों के कार्य की छात्रों के प्रति जवाबदेही विद्यालय जांच दलों का अध्यापकों पर पूर्ण नियंत्रण, प्रयोगशाला एवम् पुस्तकालयों की उचित व्यवस्था साथ ही छात्रों का उच्च आर्थिक परिवार से सम्बन्धित होना जिसके कारण छात्र मानसिक रूप से स्वतंत्र होकर अध्ययन करते हैं परिणाम स्वरूप शासकीय शहरी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती है दूसरी तरफ शासकीय ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय में अध्ययन करने वाले छात्र मध्यम या निम्न आर्थिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित होते है साथ ही ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शासकीय विद्यालयों में पर्याप्त मानवीय एवं भौतिक सुविधाओं का अभाव एवम् अध्यापकों का अपना कार्य उत्तरदायित्व पूर्ण न करना साथ ही विद्यालय में अनुशासन की उचित व्यवस्था न होने के कारण छात्र मनोयोग से नहीं पढ़ाते हैं इन सब कारणों के परिणामस्वरूप ग्रामीण शासकीय विद्यालय के छात्रों का शैक्षिक स्तर शहरी शासकीय छात्रों की अपेक्षा कम होती है।

शैक्षिक निहितार्थ :-

अध्ययन हेतु सभी प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों में ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के आधार पर बहुत अधिक अन्तर छात्रों की समायोजन क्षमता में दिखाई पड़ा है। शहरी क्षेत्र में रहने वाले छात्र जहां शासकीय एवं अशासकीय दोनों का समायोजन स्तर अधिक पाया गया जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित शासकीय एवम् अशासकीय दोनों प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत दोनों का समायोजन स्तर शहरी छात्रों की अपेक्षा कम पाया गया।

नगर क्षेत्र के शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के छात्रों के जीवन मूल्यों तथा ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवम् अशासकीय छात्रों के जीवन मूल्यों में पर्याप्त अन्तर पाया गया। शासकीय एवम् अशासकीय विद्यालय जो शहरी क्षेत्रों में स्थिति है के अभिभावक, तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति दोनों प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के अभिभावकों के सामाजिक आर्थिक स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया।

प्रस्तुत अध्ययन में पाया गया कि ग्रामीण विद्यालयों में पढ़ने वाले अधिकांश बच्चों के अभिभावक अशिक्षित कम पढ़े लिखे, आय के साधन के रूप में मजदूरी, खेती अथवा अल्प आय वाली नौकरी, परिवार के सदस्यों की संख्या अधिक पाये गये शहरी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के अभिभावक उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के पाये गये। शासकीय विद्यालयों में उच्च वर्गों के बच्चों की संख्या नगण्य है इनमें अधिकांश बच्चे अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों, मुस्लिम वर्गों तथा आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों में आते हैं जिनकी आर्थिक स्थिति दयनीय होती है। अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों को छात्रवृत्ति तथा राशन के लिए ही भेजते तथा बच्चों से घरेलू कार्य कराते पाये गये। शासकीय विद्यालयों के अभिभावक अपनी आय के नाम मात्र का भाग ही अपने बच्चों की शिक्षा पर खर्च करते पाये गये अशासकीय विद्यालयों के अभिभावक शिक्षित, अधिकांश उच्च शिक्षा प्राप्त तथा उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के पाये गये। इन विद्यालयों के अभिभावक, स्वरोजगार, नौकरी, सरकारी

अथवा अधिक आय वाली अथवा अच्छे कृषिकार्य करने वाले पाये गये इनकी मासिक आय शासकीय विद्यालयों के अभिभावकों से बहुत अधिक पायी गयी। ये अपने पाल्यों की शिक्षा पर अपने मासिक आय का एक बड़ा भाग खर्च करते हैं तथा बच्चों की शिक्षा के प्रति अत्यन्त जागरूक पाये गये।

आकड़ों के विश्लेषण उपरान्त यह बात स्पष्ट रूप से अवलोकन की जा सकती है कि शहरी शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र शासकीय ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की अपेक्षा अधिक समायोजित दिखे जिसके पीछे निहित कारण में शहरी शासकीय विद्यालयों की अनुशासन व्यवस्था, अध्यापकों का ईमानदारी या जांच के भय से किया गया अध्यापन कार्य तथा जांच एजेन्सियों की अधिक सक्रियता आदि के कारण छात्र अधिक दिन विद्यालय आये तथा कक्षा में रुककर अध्ययन किये जिसके परिणामस्वरूप वे अधिक समायोजित दिखे। इसके ठीक विपरीत ग्रामीण विद्यालयों में कम अनुशासन अध्यापकों एवं जांच एजेन्सियों की उपेक्षा तथा माता–पिता द्वारा बच्चों पर पूर्ण ध्यान न देने के कारण उन विद्यालयों के बच्चे शहरी विद्यालयों की अपेक्षा कम समायोजित दिखे।

शहरी शासकीय विद्यालयों के छात्रों की तथा ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया। शहरी शासकीय विद्यालयों के छात्र शैक्षिक निष्पत्ति शासकीय ग्रामीण विद्यालयों के छात्रों की तुलना में उच्च पायी गयी जबकि ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति निम्न पायी गयी।

शहरी शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र शासकीय ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की अपेक्षा अधिक शैक्षिक उपलब्धि दिखी जिसके पीछे निहित कारणों में शहरी विद्यालयों में उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धता उचित एवम् कठोर अनुशासन, अध्यापकों के कार्य की छात्रों के प्रति जवाबदेही, प्रयोगशाला, एवम् पुस्तकालयों की उचित व्यवस्था साथ ही छात्रों का उच्च आर्थिक परिवार से सम्बन्धित होना जिसके कारण छात्र मानसिक रूप से स्वतंत्र होकर अध्ययन करते हैं। परिणाम स्वरूप शासकीय शहरी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती है दूसरी ओर शासकीय ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय में अध्ययन करने वाले छात्र मध्यम या निम्न आर्थिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित होते है साथ ही ग्रामीण क्षेत्र में स्थिति विद्यालयों में पर्याप्त मानवीय एवम् भौतिक सुविधाओं का अभाव एवम् अध्यापकों का अपना कार्य उत्तरदायित्वपूर्ण न करना साथ ही विद्यालयों में अनुशासन की उचित व्यवस्था न होने के कारण छात्र मनोयोग से नहीं पढ़ते हैं। इन सब कारणों के परिणाम स्वरूप ग्रामीण शासकीय विद्यालय के छात्रों का शैक्षिक स्तर शहरी शासकीय छात्रों की अपेक्षा कम होती है।

संदर्भ सूची :-

श्रीवास्तव, एस.एन. (1999). *उत्तर प्रदेश ''बेसिक शिक्षा संहिता''* इलाहाबाद हिन्दी पब्लिशिंग हाउस.

पाठक पी.डी. (2011). *भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें.* अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा.

सारस्वत मालती (2010). *भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक समस्यायें.* आलोक प्रकाशन.

सारस्वत मालती और एस0एल0 गौतम (2012). *भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास.* आलोक प्रकाशन.

भार्गव, डा. महेश (1997). *आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन.* हर प्रसाद भार्गव, शैक्षिक प्रकाशन, आगरा.

गुप्ता एच.एन. (2000). *ह्यूमन वैल्यूज इन एजूकेशन.* कान्सेप्ट पब्लिसिंग कम्पनी, नई दिल्ली.

जयसवालए एम .आर. (1995). प्राब्लम्स इन एजूकेशन. *शिक्षा,* अंक 12.